International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

हिमांशु जोशी व्यक्तित्व एवं कृतित्व : मानवीय संवेदनाओं का सार

प्रज्ञा शर्मा[1], डॉ. स्नेहलता निर्मलकर[2]

[1]शोद्यार्थी, पी–एच. डी. हिन्दी, डॉ.सी.व्ही.रमन वि.वि.करगी रोड कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोध निर्देषक, सह–प्राध्यापक, हिन्दी, डॉ.सी.व्ही.रमन वि.वि.करगी रोड कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

हिमांशु जोशी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल ,सहज ,संवेदनशील और मानवीय धरातलों से जुड़ा हुआ है ,उनका संपूर्ण कृतित्व मानवीय संवेदनाओं सामाजिक यथार्थ ,पहाड़ी जीवन की पीड़ा ,संघर्ष ,प्रकृति प्रेम और जीवन मूल्यों की गहरी समझ से निर्मित है। उनके साहित्य में मानवीय हृदय की गहराइयों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है । जोशी जी का व्यक्तित्व न केवल सरल और सहज रहा बल्कि उनकी लेखनी में मानव मन की सूक्ष्मतम अनुभूतियों को सजीव करने की अद्भुत क्षमता दिखाई देती है। उपन्यासों और कथाओं में उनकी संवेदनशील दृष्टि करुणा जीवन संघर्ष और रिश्तो की मार्मिकता उन्हें विशिष्ट बनाती है। इसलिए उनके व्यक्तित्व को मानवीय संवेदनाओं का सार कहना पूर्णता सार्थक है । हिंदी साहित्य में हिमांशु जोशी का जन्म मानवीय संवेदनाओं सामाजिक यथार्थ ,पहाड़ी जीवन और मनोवैज्ञानिक गहराइयों के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है ,उनका व्यक्तित्व जितना सरल, सहज और संवेदनशील था ,उतना ही उनका कृतित्व भी मनुष्य के आंतरिक संसार ,जीवन संघर्ष, प्रकृति प्रेम और सामाजिक विसंगतियों को गहरे स्तर पर परखता है।

मुख्य शब्दः– यथार्थ ,वैश्वीकरण ,अस्तित्व ,मानवीय संवेदना, संवेदनशील, विसंगति, सशक्तिकरण।

1. प्रस्तावना :– हिन्दी उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में हिमांशु जोशी एक ऐसे रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित है जिन्होंने अपने साहित्य में मनुष्य की पीड़ा ,संघर्ष से संवेदना और अस्तित्व के प्रश्नों को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया उनका साहित्य मात्र कथा विन्यास नहीं बल्कि मनुष्य की अंतरात्मा का दस्तावेज है। पहाड़ी जीवन की वास्तविकता ,प्रकृति का सौंदर्य ,मानवीय रिश्तों ,सामाजिक विषमताओं की त्रासदी इन सभी को उन्होंने जिस गहराई से अभिव्यक्त किया वह अन्य समकालीन लेखकों से अलग पहचान दिलाता है । जोशी जी जीवन को बाहरी बनावट से नहीं बल्कि आंतरिक सच्चाइयों को देखते थे ,उनका पूरा व्यक्तित्व ,कृतित्व मानवीय संवेदनाओं का सार बन जाता है। हिन्दी साहित्य की परंपरा में अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से समाज संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं को स्वर दिया है । आधुनिक हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में हिमांशु जोशी का नाम विशेष महत्व है, उनके साहित्य में यथार्थ और मानवीय अस्मिता प्रस्तुत है । हिमांशु जोशी ने अपने साहित्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य को पहाड़ी जीवन, ग्रामीण संस्कृति ,सामाजिक मूल्यों प्रकृति प्रेम की झलकियां दिखलाई है, इन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति और समाज के बीच के द्वंद्व को बदलते हुए यथार्थवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। साथ ही संघर्षशीलता और जीवन की गहरी सच्चाइयां हमें देखने को मिलती है । हिमांशु जोशी के साहित्य हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में योगदान देता है।

2. हिमांशु जोशी जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व की विशेषताएं :–

हिमांशु जोशी जी हिंदी के प्रतिष्ठित कहानीकार ,उपन्यासकार और पत्रकार थे । जोशी जी का जन्म 4 मई सन् 1935 उत्तराखंड के चंपावत जिले के जोस्यूडा गांव में हुआ। जोशी जी का बचपन खेती खान गांव में बिता। नैनीताल में उच्च शिक्षा प्राप्त किये। पिता का नाम पूर्णानंद जोशी एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। पिता का संघर्ष जोशी जी के लिए प्रेरणा स्रोत बना। जोशी जी पेशेवर जीवन की शुरुआत पत्रकारिता से किए। सर्वप्रथम दिल्ली में इंद्रधनुष पत्रिका में कार्य किया । वे लंबे समय तक हिन्दी पत्रिका कदंबिनी और साप्ताहिक हिंदुस्तान के संपादक के रूप में सेवा दिए। हिंदी साहित्य में लेखन कार्य किया सर्वप्रथम कविता लिखते थे, कुछ समय बाद कहानी एवं उपन्यास लिखे। जोशी जी ने उपन्यास के पात्र आम आदमी के बीच से ही लिया ,उन्होंने व्यक्ति विशेष के बजाय यथार्थ सामाजिक चित्रण को अधिक प्राथमिकता दिये। समाज की अस्मिता मूलक यथार्थ को परिस्थितियों का अनेक पात्रों के माध्यम

से सफल चित्रण किया है। धार्मिकता के आधार पर होने वाले बाह्य आडंबरों का यथार्थ चित्रण किया है। जोशी जी ने कुछ सात उपन्यास लिखे हैं अरण्य ,महासागर ,छाया मत छूना मन, कगार की आग, समय साक्षी है , सुराज, तुम्हारे लिए। इन उपन्यासों के माध्यम से जोशी जी ने समाज में फैली कुरीतियों पर करारा प्रहार किया । समाज की अस्मिता मुल्क मनोवृति का खुला नग्न चित्रण कर साहित्य में अपना बहुमूल्य मत स्थापित किया। जोशी जी के उपन्यासों में आंचलिक जीवन से संबंधित सौंदर्य, पहाड़ी जीवन ,भाषा, वेशभूषा ,रहन–सहन,नारी,महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण जीवन की संपूर्ण अस्मिता का स्पष्ट यथार्थ परक चित्रण देखने को मिलता है। जोशी जी के उपन्यासों में चित्रित पात्र पर उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव है। हिमांशु जोशी जी को साहित्य में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ''अरण्य'' पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार। राजभाषा विभाग बिहार की ओर से गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार प्रदान किया गया ।जोशी जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में इंद्रधनुष के उप संपादक कदंबिनी के सदस्य तथा साप्ताहिक हिंदुस्तान के संपादक का भी कार्यभार संभाला। जोशी जी जीवन के अंतिम समय तक साहित्य सृजन करते रहे। देहावसान के कुछ समय पूर्व तक नार्वे से प्रकाशित पत्रिका शांति दूत के सलाहकार संपादक रहे। 23 नवंबर 2018 को पत्रकारिता एवं साहित्य जगत का यह सूरज सदैव के लिए डूब गया।

3. हिमांशु जोशी का व्यक्तित्वः–

हिमांशु जोशी का जन्म उत्तराखंड की पहाड़ी अंचल में हुआ जिसका उनके व्यक्तित्व और लेखन दोनों पर गहरा प्रभाव पड़ा । शांत ,सरल और प्रकृति प्रेमी वातावरण ने उनकी संवेदनशीलता को विकसित किया।

1 सरल व्यक्तित्वः– जोशी जी स्वयं को बड़े लेखक का आभास नहीं देते थे, उनके व्यवहार में सादगी, सरलता ,मधुरता और सहजता थी। वे शब्दों से अधिक संवेदना को प्राथमिकता देते थे।

2 प्रकृति प्रेमः– एक पहाड़ी लेखक के रूप में उनका व्यक्तित्व प्रकृति के साथ संवाद करता है । वह पहाड़ को केवल भौगोलिक स्थान नहीं बल्कि जीवित चरित्र की तरह देखते थे।

3 मानवीय करुणा और संवेदनात्मक गहराई :– हिमांशु जोशी की यह प्रमुख विशेषता है दूसरों के दुखों को आत्मसात करने की क्षमता मनुष्य के अंत विरोध पीड़ा ,अकेलेपन ,प्रेम, रिश्तो के उतार चढ़ाव को वे अत्यंत कोमलता से चित्रित करते थे।

4 सामाजिक संवेदनशीलता :– उनका व्यक्तित्व केवल निजी भावनाओं तक सीमित नहीं था । वे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता स्त्री की स्थिति और मानवीय शोषण के प्रति भी अत्यंत सजग थे।

4. हिमांशु जोशी का कृतित्व :–

हिमांशु जोशी जी ने अनेक उपन्यास, कहानी, निबंध और संस्मरण लिखे जिनमें भावनाओं प्रकृति और यथार्थ का गहरा संबंध दिखता है।

1 लेखनी का स्वर :–जोशी जी की रचनाएं तीखे प्रहार नहीं करती बल्कि धीरे–धीरे हृदय को छूती है वे किसी पात्र को दोषी नहीं ठहराते बल्कि उसके भीतर के द्वंद्व और परिस्थितियों को सामने लाते हैं।

2 विषय वस्तु की विविधता :–जोशी जी की रचनाओं में विषय की विविधता है जैसे पहाड़ी जीवन की त्रासदी ,व्यक्ति की पहचान का संघर्ष, नारी की स्थिति, सामाजिक यथार्थ ,मनोवैज्ञानिक जटिलताएं, प्रकृति का आत्मीय स्वरूप ।

3 रचनाओं में यथार्थ और संवेदना :–जोशी के साहित्य में यथार्थ कटु होते हुए भी संवेदना के साथ गूंथा हुआ है। वे वास्तविक जीवन का सच दिखाते हैं ,लेकिन उसमें करुणा और मानवता का गहरा स्पर्श रहता है।

4 पीड़ा और करुणा :– जोशी जी के पात्र प्रायरू दुख संघर्ष और जीवन की उहापोह से गुजरते हैं परंतु यह पीड़ा केवल त्रासदी नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन, सहनशीलता और मनोबल को दर्शाती है।

5 मनोवैज्ञानिक संघर्ष :– जोशी जी के पात्रों के भीतर चलने वाले भावनात्मक द्वंद को बारीकी से उकेरते हैं भय , असुरक्षा, निराशा ,पछतावा, आशा ,अपराध बोध यह सभी उनकी संवेदनात्मक गहराई को प्रकट करते हैं

6 सामाजिक यथार्थ और संवेदनाओं का समन्वय :– जोशी जी समाज से कटे हुए लेखक नहीं थे उनके साहित्य में पहाड़ी समाज की आर्थिक और सामाजिक विषमताएं महत्वपूर्ण स्थान रखती है उनकी कहानियों में आम आदमी के संघर्ष गरीबी और असमानता की पीड़ा बार–बार दिखाई देती है स्त्री पात्र उनकी रचनाओं में केवल चरित्र नहीं बल्कि भावनाओं की संपूर्ण दुनिया लेकर आती है। वे स्त्री को संवेदनाओं के साथ–साथ आत्मसम्मान संघर्ष और आत्म निर्णय से जोड़कर देखते हैं।

7 भाषा शैली और शिल्प :– जोशी जी की भाषा अत्यंत सहज प्रवाहमयी और भावनात्मक है । वे अत्यधिक शब्द आडंबर से दूर रहते हैं। प्रकृति के बिंब उनके साहित्य में भावनाओं को रूपक की तरह व्यक्त करते हैं । उनकी शैली आत्मवलोकन और मन की गहराइयों में उतरने वाली है। वे पात्रों के भीतर की आवाज को भी शब्द देते हैं।

8 जोशी जी के साहित्य का मूल्यांकन :– हिन्दी साहित्य में जोशी जी का योगदान अतुलनीय है, उन्होंने पहाड़ी जीवन को पहली बार इतनी गहराई से चित्रित किया साथ ही मानवीय संवेदनाओं को साहित्य का केंद्र बनाया उन्होंने यथार्थ के कटु रूप को भी करुणा के साथ प्रस्तुत किया । मनोवैज्ञानिक समझ अत्यंत प्रखर थी। इनका साहित्य पाठक को भीतर तक छू लेता है और आत्म चिंतन के लिए प्रेरित करता है।

5. हिमांशु जोशी की मानवीय संवेदना :–

हिमांशु जोशी की मानवीय संवेदना उनके समूचे साहित्य की आत्मा है। उनकी कथाओं और उपन्यासों में मनुष्य केवल पात्र नहीं, बल्कि अपने दुख–सुख, संघर्ष और आशाओं के साथ "जीवित" होकर सामने आता है। उनकी मानवीय संवेदना को निम्न बिंदुओं में समझा जा सकता है।

1. साधारण मनुष्य के प्रति गहरी सहानुभूति – हिमांशु जोशी के साहित्य में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, पर्वतीय जन ये सभी अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित हुए हैं। वे पात्रों को दया की वस्तु नहीं बनाते, बल्कि उन्हें सम्मान और आत्मसम्मान के साथ प्रस्तुत करते हैं।

2. दुख और पीड़ा की यथार्थ अभिव्यक्ति–उनकी रचनाओं में गरीबी, अकेलापन, वियोग, बेरोजगारी, पलायन और सामाजिक अन्याय की पीड़ा बहुत सघन रूप में आती है। वे करुणा को भावुकता नहीं बनाते, बल्कि उसे यथार्थ के धरातल पर स्थापित करते हैं।

3. स्त्री–संवेदना का सशक्त चित्रण–हिमांशु जोशी की स्त्री–पात्र केवल सहनशील नहीं, बल्कि सजग, संघर्षशील और आत्मगौरव से युक्त हैं। वे स्त्री की मानसिक पीड़ा, सामाजिक बंधनों और उसके भीतर की शक्तिकृतीनों को समान संवेदनशीलता से चित्रित करते हैं।

4. प्रकृति और मनुष्य का भावनात्मक संबंध–पर्वतीय वातावरण उनकी रचनाओं में केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि संवेदना का स्रोत है। प्रकृति उनके यहाँ मानवीय भावनाओं की सहचरी बनकर आती है, कभी स्नेहशील, कभी कठोर, तो कभी मौन साक्षी।

5. मनोवैज्ञानिक गहराई–हिमांशु जोशी मनुष्य के अंतर्मन की गुत्थियों को बड़ी बारीकी से खोलते हैं। उनके पात्रों का द्वंद्व, आत्मसंघर्ष और संवेदनात्मक उलझनें पाठक को भीतर तक छू लेती हैं।

6. मानवीय मूल्यों की पक्षधरता–ईमानदारी, करुणा, प्रेम, विश्वास और नैतिकता, ये मूल्य उनकी रचनाओं में सहज रूप से प्रवाहित होते हैं। वे किसी उपदेश की तरह नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों से उपजे सत्य की तरह सामने आते हैं।

हिमांशु जोशी का साहित्य मनुष्य के पक्ष में खड़ा साहित्य है। उनकी मानवीय संवेदना उन्हें एक बड़े कथाकार के रूप में स्थापित करती है, क्योंकि वे केवल कहानी नहीं लिखते, मनुष्य की "पीड़ा की भाषा" लिखते हैं। जोशी जी के उपन्यास अरण्य के छपने पर अच्छी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई आंचलिक उपन्यासों का दौर शुरू हो चुका था अतः एक क्षेत्र विशेष की प्रतिनिधि कृति के रूप में इसका समुचित आकलन हुआ । उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ से अरण्य को उस वर्ष प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया । जोशी जी की रचनाएं छाया मत छूना मन, अरण्य ,मनुष्य चिन्ह, श्रेष्ठ आंचलिक कहानियां तथा गंधर्व गाथा को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही हिमांशु जोशी की कहानियां तथा भारत रत्न पंडित गोविंद बल्लभ पंत नमक कृतियों को हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया है । इसी प्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च स्तरीय योगदान के लिए उन्हें केंद्रीय हिन्दी संस्थान, मानव संसाधन ,मंत्रालय ,भारत सरकार द्वारा स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह उपलब्धियां उनकी उत्कृष्ट साहित्य सेवा के फल है।

हिमांशु जोशी जी कहते थे भविष्य में मनुष्य के भौतिक उपलब्धियां अपने चरम उत्कर्ष पर होगी इसलिए स्वाभाविक रूप में मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन भी होने लगेगा । भौतिक साधनों की प्रचुरता होगी लेकिन इस परिस्थिति में मानवीय मूल्य की आवश्यकता अधिक गहराई से महसूस की जाएगी।

6. निष्कर्ष–

हिमांशु जोशी का साहित्य एक ऐसे लेखक की पहचान है ,जो मनुष्य के बसे संसार को समझता था। उनके व्यक्तित्व जितना सरल, संवेदनशील और स्नेहपूर्ण था उतना ही उनका कृतित्व मानवीय करुणा, संवेदना और यथार्थ की गहरी समझ से निर्मित है । वह केवल उपन्यासकार ही नहीं बल्कि मानव मन के दृष्टा थे। उनके साहित्य में संवेदना, यथार्थ, प्रकृति ,जीवन और मनुष्य सभी एक दूसरे में घुल मिलकर एक ऐसा संसार रचते हैं ,जो पाठक को भावनात्मक रूप से समृद्ध करता है। हिमांशु जोशी के उपन्यासों में अस्मिता का स्वर, संवेदनशील मानवीय और आत्म साक्षात्कारी है उनके पात्र अपने अस्तित्व की पहचान को पाने के लिए संघर्ष करते हैं और यही संघर्ष उनके साहित्य को यथार्थवाद से जोड़ता है इनका साहित्य ,समाज और मनुष्य दोनों की आत्मबोध का दस्तावेज बन जाता है। हिमांशु जोशी के पात्र साधारण होते हुए भी असाधारण दुःख, संघर्ष झेलते हैं गरीब, शोषित और उपेक्षित वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति उनके लेखन की पहचान है। एकाकीपन और टूटन आधुनिक जीवन की त्रासदी है, जिसे वे पूरी करुणा से उभारते हैं। स्त्री–जीवन के दुःखों के प्रति विशेष संवेदनशीलता दिखाई देती है शोषण, असुरक्षा और मौन यातना का सशक्त चित्रण। अन्याय के विरुद्ध मनुष्य भीतर ही भीतर प्रतिरोध करता है। पर्वत, गाँव और परिवेश साहित्य न तो उपदेशक है, न भावुकतावादी; वह जीवन–जैसा है। हिमांशु जोशी के साहित्य में मानवीय संवेदना जीवन की धड़कन है। उनके पात्र टूटते हुए भी संवेदना नहीं खोते; बल्कि उसी के सहारे जीते हैं। यही संवेदना उनके कथा–साहित्य को सामाजिक दस्तावेज़ और मानवीय बयान दोनों बनाती हैं

संदर्भ ग्रंथः –

1. हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में आंचलिकता ,डॉ. अरुण प्रकाश
2. कगार की आग, ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
3. कहानियां ,किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली
4. यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली
5. कथातीरे इकसट कहानियां, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली ,1995।
6. अरण्य, किताब घर प्रकाशन ,नई दिल्ली ,1994
7. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, त्रिभुवन सिंह ,नई दिल्ली